चैतन्य हो बाप को याद करो

नींद करना ,सुन्न हो जाना नही कोई योग

आँख खोल कर योग करना

काम काज करते बुद्धि एक बाप की याद में रखना

गृहस्थ व्यवहार समभ्भालते बुद्धि योग

एक बाप संग रखना

याद की यात्रा और पढाई से होती कमाई

पावन बनो, विकर्म विनाश करों

जो होते बाप के संस्कार वो ही

ब्राह्मणों के ओरिजिनल संस्कार

मेरा शब्द पुरुषार्थ को ढीला करता

निश्चयबुद्धि पुरुषार्थी सभ्भिंनबुद्धि के संग

रखों

समर्थी बन सर्व शक्तियों के अधिकारी बनों

मेरा बाबा

ॐ शांति!!!